Class – M.A. Semester II

Paper – VI

पाश्चात्य ज्ञानमीमांसा

(Western Epistemology)

Topic – प्रागनुभविक एवं अनुभवाश्रित

(A Priori and A Posteriori)

डॉ० पूनम शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग
आर० एम० कॉलेज

प्रागनुभविक एवं अनुभवाश्रित

(A Priori and A Posteriori)

अंग्रेजी 'A Priori' तथा 'A Posteriori' मूल रूप से लेटिन भाषा के शब्द हैं। 'A Priori' शब्द का प्रयोग अनुभवनिरपेक्ष ज्ञान के रूप में होता है अर्थात् वैसा ज्ञान जो अनुभव से स्वतन्त्र हो या अनुभव की अपेक्षा नहीं रखता हो। इस ज्ञान को 'प्रागनुभविक' कहा जाता है। दूसरी ओर 'A Posteriori' का प्रयोग 'A Priori' के विरोधी के रूप में होता है। यह अनुभव पर आश्रित ज्ञान का द्योतक है अर्थात् जिस ज्ञान की सत्यता और प्रामाणिकता अनुभव पर आधारित हो, वह अनुभवाश्रित (A Posteriori) है।

प्रागनुभविक एवं अनुभवाश्रित ज्ञान की समस्या मौलिक रूप से दार्शनिक सिद्धान्तों के आधार

पर उत्पन्न हुई है। बुद्धिवाद (Rationalism) में यह माना जाता है कि सम्पूर्ण ज्ञान या ज्ञानखण्ड की सत्यता और प्रामाणिकता अनुभव पर आश्रित नहीं है। किन्तु अनुभववाद (Empiricism) के ~~समर्थक~~ अनुसार समस्त ज्ञान को तभी सत्य और प्रामाणिक माना जा सकता है, जब वह अनुभव के द्वारा सत्यापित हो। इन दोनों सिद्धान्तों से भिन्न समीक्षावाद (Criticism) में अनुभवनिरपेक्ष एवं अनुभव पर आश्रित दोनों प्रकार के तत्वों को समान रूप से आवश्यक माना गया है।

प्रतिज्ञप्ति एवं ज्ञान दोनों ही प्रागनुभविक एवं अनुभवाश्रित हो सकते हैं। प्रतिज्ञप्ति वस्तुतः भाषा में व्यक्त किया गया निर्णय है जिसकी अभिव्यक्ति सूचनात्मक वाक्य के द्वारा होती है। इन प्रतिज्ञप्तियों के व्यवस्थित संघात (Organised Set of Propositions) को ज्ञान कहा जा सकता है। इसप्रकार ज्ञान की अभिव्यक्ति प्रतिज्ञप्ति के माध्यम से ही होती है। अनुभव से निरपेक्ष या स्वतन्त्र प्रतिज्ञप्ति को 'प्रागनुभविक' तथा अनुभव पर आश्रित प्रतिज्ञप्ति को 'अनुभवाश्रित' कहते हैं। जैसे—(1) लाल वस्तु लाल है (2) जिस वस्तु में आकार है, उसमें फैलाव (extension) है (3) A B से बड़ा है, B C से बड़ा है, तो A C से बड़ा है — ये सभी प्रागनुभविक प्रतिज्ञप्ति के उदाहरण हैं। इन प्रतिज्ञप्तियों की सत्यता अनुभव पर आश्रित नहीं है। अनुभव जगत् से ये पूर्णतः स्वतन्त्र हैं। इसीप्रकार अनुभवाश्रित प्रतिज्ञप्ति के उदाहरण हैं—(1) कौवे काले हैं (2) कुछ गुलाब लाल है (3) खिड़की खुली है, आदि। ये अनुभवाश्रित प्रतिज्ञप्तियाँ अनुभव पर आधारित होती हैं। यदि यथार्थ में इनकी अनुभूति होती है, तो ये सत्य हैं अन्यथा ये प्रतिज्ञप्तियाँ असत्य हैं। इन दोनों प्रतिज्ञप्तियों की अनेक विशेषताएँ हैं।

① प्रागनुभविक प्रतिज्ञप्ति की मुख्य विशेषताएँ

(i) ये प्रतिज्ञप्तियाँ सदा सत्य ही रहती हैं, चाहे अनुभव जगत् में कुछ भी हो।

(ii) इनकी सत्यता अपरिवर्तनशील या अनिवार्य (Necessary) होती है।

(iii) इन प्रतिज्ञप्तियों के अनिवार्य रूप से सत्य होने से इनके निषेध के बारे में सोचना या इसे अस्वीकार करना असंगत है। जैसे — यदि कोई प्रतिज्ञप्ति P सत्य है, तो उसका निषेध not-P सत्य नहीं हो सकता। यदि इस तथ्य को नकारा जाये, तो यह असंगत एवं व्याघातपूर्ण होगा।

(iv) प्रागनुभविक प्रतिज्ञप्तियाँ पूर्णतः सार्वभौम (Universal) होती हैं अर्थात् वे अपवादरहित होती हैं, सभी देशों एवं कालों के लिए सत्य होती हैं। उदाहरण के लिए, त्रिभुज में तीन भुजाएँ होती हैं, कोई व्यक्ति एक ही समय में दो विभिन्न स्थानों पर नहीं रह सकता है, आदि। ये प्रतिज्ञप्तियाँ सार्वभौम रूप से सत्य हैं।

(v) प्रागनुभविक प्रतिज्ञप्तियों की सत्यता सुनिश्चित (certain) होती है। जैसे — दो और दो का योग चार होता है, इस प्रतिज्ञप्ति की सत्यता सुनिश्चित है।

② अनुभवाश्रित प्रतिज्ञप्ति की मुख्य विशेषताएँ

(i) इन प्रतिज्ञप्तियों की सत्यता अनुभव पर आधारित होती है। जैसे — यह स्कूल गोल है, कुछ गुलाब पीले हैं, ~~सभी~~ आज स्कूल बन्द है — इन प्रतिज्ञप्तियों को तभी सत्य कहा जा सकता है, जब अनुभूति में वह स्कूल गोल दिखे, गुलाब के कुछ फूल पीले हों तथा आज स्कूल खुला नहीं हो, अन्यथा ये प्रतिज्ञप्तियाँ ~~असत्य~~ असत्य हैं।

(ii) इनकी सत्यता अनिवार्य नहीं होती, बल्कि आपातिक (Contingent) होती है। अनुभव जगत में परिवर्तन होने से जो आज सत्य हैं, वे कल असत्य भी हो सकती हैं। कोई सत्य

प्रतिज्ञप्ति भविष्य में असत्य और कोई असत्य प्रतिज्ञप्ति सत्य सिद्ध हो सकती है।

(iii) अनुभवसापेक्ष प्रतिज्ञप्ति का निषेध व्याघातपूर्ण नहीं होता, इन प्रतिज्ञप्तियों के निषेध की कल्पना की जा सकती है।

(iv) कोई भी अनुभवसापेक्ष प्रतिज्ञप्ति पूर्ण रूप से सार्वभौम नहीं हो सकती। इस तथ्य की निश्चितता नहीं है कि आज जो सत्य है, वह सदैव सत्य ही रहेगा, उसका असत्य होना सम्भव है। इसलिए इन प्रतिज्ञप्तियों को सार्वभौम नहीं कहा जा सकता।

(V) किसी आनुभविक प्रतिज्ञप्ति की सत्यता पर संदेह किया जा सकता है। इन प्रतिज्ञप्तियों में ऐसी कोई अनिवार्यता नहीं होती है कि उनका नहीं होना सोचा नहीं जा सके, वे नहीं भी हो सकती हैं।

नोट — विस्तृत अध्ययन के लिए पाश्चात्य ज्ञानमीमांसा से सम्बद्ध किताबें पढ़ें। जैसे —

(1) दर्शनशास्त्र की रूपरेखा — प्रो० राजेन्द्र प्रसाद
(2) तत्त्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा — केदार नाथ तिवारी

——— X ——— X ———